

प्रभु मिलन की ऋतु आई

भाग्यवान और अति पुण्यात्माओं का ही भगवान से मिलन होता है। जन्म-जन्म हम सब प्रभु-मिलन की इंतजार में नयन बिछाये थे... उनके आगमन की राहें तक रहे थे... त्याग व तपस्या के पथ पर चल रहे थे। परन्तु हम उनसे मिलने नहीं जा सकते थे। उन्हें ही हमसे मिलने आना था। पुरुषोत्तम संगमयुग के स्वर्णिम पल आये। सर्वशक्तिमान का ब्रह्मा तन में अवतरण हुआ, और अब तक उनका अवतरित होना चालू है। जो देवकुल की महानात्माएँ थीं वे उन्हें पहचान लेती हैं। जो उनसे मिलना चाहते थे, वे उनकी आशा पूर्ण कर रहे हैं।

कितना सुंदर अवसर है, आकर अपने परमपिता, परमशिक्षक व परम सद्गुरु से मिलने का, अतिन्द्रिय सुख पाने का। भौतिक सुखों से तो संसार तृप्त नहीं हो रहा है, मानसिक अशांति व परेशानियां बढ़ती जा रही

दिशा देकर जायें।

कई लोग केवल यह देखने आते हैं कि क्या सचमुच भगवान आते हैं। कई लोग कई आकांक्षाएँ लेकर आते हैं कि हमें साक्षात्कार हो, या ये ये मिले। कई लोग पवित्रता धारण किये बिना ही आ जाते हैं। इन सभी को अनुभव नहीं होते। सम्पूर्ण धारणा-युक्त, निश्चय बुद्धि व श्रेष्ठ अनुभव की इच्छुक आत्माओं को ही अच्छे अनुभव होते हैं।

आप यदि इस बार बाबा से सुख पाने आ रहे हैं तो याद रहे बाबा की दृष्टि उन पर ही पड़ती है जिन्होंने उनके द्वारा दिये गये काम किये होंगे। जैसे - बाबा ने कहा था कि छः मास में सभी व्यर्थ से मुक्त हो जाएं। जिन्होंने इस पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया, बाबा का भी ध्यान उन पर नहीं जाता। बाबा ने संस्कार परिवर्तन के लिए कहा था। परन्तु जिनके संस्कार वही पुराने हैं, उन्हें भी परमात्म-प्यार

आयें तो अन्तर्मुखी होकर विशेष साधना करें। कुछ सुझाव लिख रहे हैं।

ये भूमि अति पवित्र है, जहाँ परमात्मा के कदम पड़ते हैं, जहाँ एक साथ हजारों महान आत्माओं का वास होता है। यहाँ एकाग्रता सहज होती है, इसलिए यहाँ सारा दिन अन्तर्मुखी रहकर योग-युक्त रहने पर ध्यान दें। यहाँ भी यदि आप बाह्यमुखी रहते हैं और व्यर्थ बातों में व्यस्त रहते हैं तो ये भूमि आपके लिए वरदानी सिद्ध नहीं होगी। साथ ही साथ ज्ञान-योग की क्लासेज का भी पूरा लाभ उठायें।

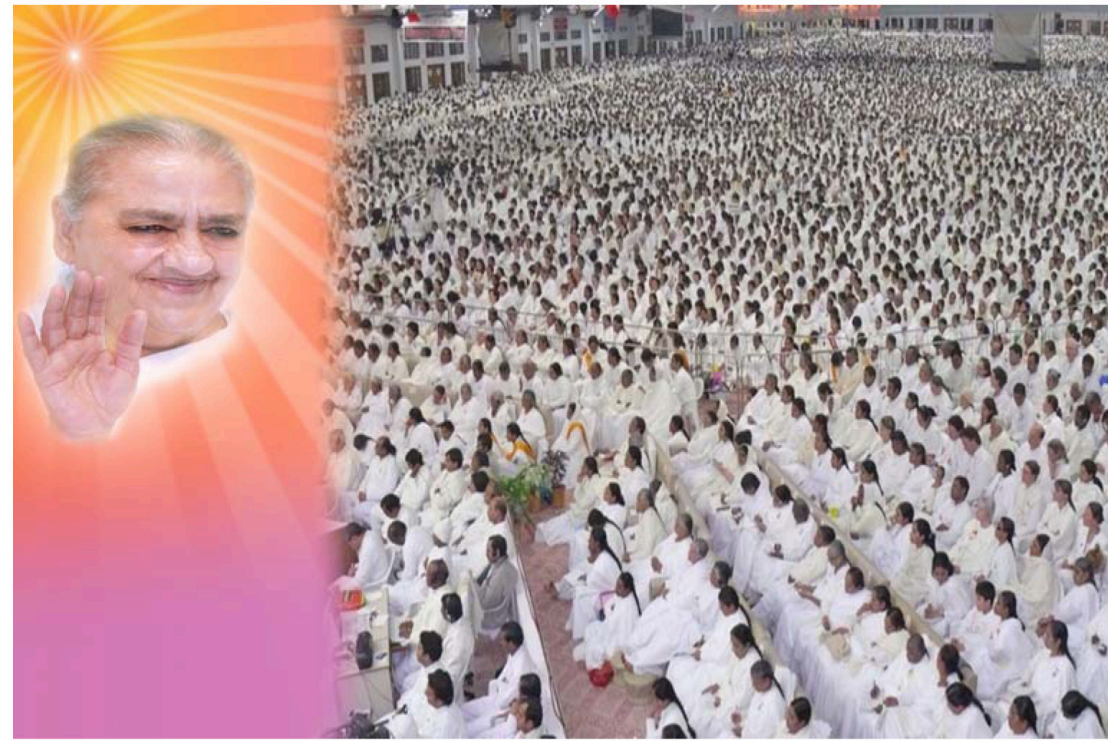
प्रभु-मिलन के दिन सहित दो दिन मौन रहकर विशेष साधनाएँ करें। ताकि निरंतर परमात्म-अनुभूति होती रहे। योग-साधना में न केवल अनुभूति है बल्कि जन्म-जन्म की कमाई भी है, इसमें तपकर आत्मा खरा सोना बन जाती है।

यहाँ के आकर्षण वातावरण में प्रतिदिन ही कम से कम तीन बार प्रभु-मिलन के अनुभव करते रहें। इसके लिए एक अभ्यास लिख रहे हैं। अशरीरी होकर बैठें... और फिर अनुभव करें कि मैं फरिश्ता आकाश के ऊपर सूक्ष्म वतन में हूँ... चारों ओर सफेद प्रकाश है व परमानन्द है... सामने बापदादा हैं, उनके अंग-अंग से प्रकाश की किरणें फैल रही हैं... बाबा के मस्तक में महाज्योति चमक रही है... बाबा

दृष्टि दे रहे हैं... फिर बाबा ने अपनी हजार भुजाएँ मेरे सिर पर फैला दी हैं... आनंद लें एक मिलन तक।

इसके बाद नीचे आ जाएं और बापदादा का आह्वान करें। पहले ज्ञान-सूर्य शिव बाबा को परमधाम में जाकर निमंत्रण दें... हे ज्ञान सागर... हे प्रेम के सागर... हे मेरे प्राणेश्वर बाबा... हम आपके प्यारे बच्चे, नीचे आपका आह्वान कर रहे हैं, आप अपना धाम छोड़कर नीचे आ जाएं... हमारी आवाज सुनकर ज्ञान-सूर्य नीचे उतरने लगे... वे अपनी तेजस्वी किरणें चारों ओर फैलाते हुए नीचे आ रहे हैं... आ गये सूक्ष्मलोक में, ब्रह्मा के सूक्ष्म तन में प्रविष्ट हुए... अब दोनों नीचे आ रहे हैं... अति दिव्य फरिश्ता अपना तेज चारों ओर फैलाते हुए नीचे उतर रहा है... आ गये हमारे सम्मुख... हमें दृष्टि दे रहे हैं... उन्होंने अपना वरदान हाथ मेरे सिर पर रख दिया है... उनके हाथ से शक्तियों की किरणें निकलकर मुझमें समा रही हैं... एक मिनट तक अनुभव करें।

इस तरह की तैयारी से प्रभु-मिलन एक यादगार बन जाएगा। इस अभ्यास से मन शान्त व एकाग्र होगा तथा परमात्म-वायब्रेशन्स व वरदानों को ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाएगा।



हैं, न धन पाकर मनुष्य संतुष्ट है, न पद पाकर। न परिवार उसके लिए सुखदाई है, न कर्मक्षेत्र। अब सुखों के सागर स्वयं जन्म-जन्म के दुख हरकर अतिन्द्रिय सुख देने आये हैं। आ जाओ इससे झोली भरने।

यों तो सेवाकेन्द्रों पर भी परमात्म-महावाक्य सुने जाते हैं व प्रभु-मिलन के दृश्य टीवी पर देखे जाते हैं, परन्तु मधुबन के सौम्य वातावरण में और हजारों महानात्माओं के सानिध्य में इस मिलन का सुख अनुपम ही है। पूरे हाल में परमात्म-प्रेम की तरंगों से वातावरण महक उठता है। सभी के शान्त चित्त श्रेष्ठ वायब्रेशन्स पैदा करते हैं। सभी के नयन प्रभु-दर्शन के लिए लालायित हो उठते हैं। ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को पाने के लिए जब ब्रह्मा वत्स लौकिकता से मुक्त होकर मधुबन में आते हैं तो वही दृश्य बनता है जिसका भागवत में आख्यान है।

सभा में पच्चीस से तीस हजार तक प्रभु-प्रेमी महानात्माएँ बैठी होती हैं। हर बार हम देखते हैं कि साठ प्रतिशत तो परम-आनंद में विभोर हो जाती हैं। तीस के लिए ये अद्भुत दृश्य होता है परन्तु दस प्रतिशत आत्माएँ अनुभव से वंचित भी दिखाई देती हैं। हम चाहते हैं सभी को परमात्म-मिलन का सुख मिले। सभी आंगतुक अपने जीवन को नई

नहीं मिलता।

बिना पवित्रता के इस मिलन में आना स्वयं को श्रापित करना है। इसमें चाहे स्वयं की गलती है या लाने वालों की। पवित्रता के सागर के वायब्रेशन्स केवल पवित्र आत्माओं को ही मिलते हैं। यहाँ आने से पूर्व आप अपने आध्यात्मिक स्तर को बढ़ाकर आयें अर्थात् अपनी स्थिति को ऊँचा उठाकर आयें, तब यह मिलन अनुपम होगा। स्थिति को श्रेष्ठ बनाने हेतु हम यहाँ कुछ सुझाव लिख रहे हैं। आप उनका पालन करें।

कम से कम एक मास अमृतवेले उठने का दृढ़ संकल्प करें। उठकर कुछ अच्छे अभ्यास करें। सूक्ष्म वतन में बापदादा के समक्ष जाकर उनसे दृष्टि लें।

दिन में तीन बार फरिश्ता सो देवता स्वरूप का अच्छी तरह अनुभव करें। प्रत्येक बार यह ड्रिल पाँच-पाँच मिनट अवश्य करें।

प्रतिदिन मुरली का सुख लें व स्वयं में कोई विशेष परिवर्तन करें। अर्थात् अपने संस्कारों को सरल बनायें व किसी एक बुराई को छोड़ने की दृढ़ इच्छा पैदा करें।

प्रतिदिन चार घण्टे मौन अवश्य रखें व अपना योगचार्ट दो घण्टा अवश्य करें। यदि चार घण्टे हो जाए तो यह वरदान सिद्ध होगा।

इसके अतिरिक्त जब आप मधुबन में



भीलवाड़ा। चैतन्य देवियों की झांकी में दिखाई दे रही हैं रशिया की बहनें।



श्रीगंगानगर। क्लब के अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करती हुई माउंट आबू की ब्र.कु.ऊषा बहन।



मोहाली। 'अलविदा तनाव शिविर' का उद्घाटन करते हुए न्यायमूर्ति ए.एन.जिंदल, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.अचल, ब्र.कु.प्रेमलता बहन तथा अन्य।



करनाल। सी.एस.एस.आर.आई. के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.भरत भूषण।



लुधियाना। खालसा कॉलेज के विद्यार्थी और स्टाफ को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.ज्योति बहन।



अंबाला। कार्यक्रम के पश्चात् भरत भूषण का अभिनंदन करते हुए लायंस क्लब के सदस्य।



झालावाड़। रोटरी क्लब में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.मीना बहन तथा ध्यानपूर्वक सुनते हुए क्लब के सभी सदस्य।